प्रकाशकीय निवेदन

षट्खंडागम सिद्धान्त धवला ग्रन्थके चतुर्थ खण्डके पंचम व षष्ठ भागमें अर्थात् ग्यारहवें पुस्तकमें वेदनाक्षेत्र वेदनाकालका वर्णन किया गया है।

इस ग्रन्थका पूर्व प्रकाशन श्रीमन्त सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक सिद्धान्त ग्रन्थमाला, विदिशा द्वारा हुआ है। उसका मूल ताड़पत्र ग्रन्थसे मिलान कर संशोधित पाठसहित तृतीयावृत्ति प्रकाशन-अधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रन्थमाला, सोलापुर द्वारा प्रकाशित करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

इस ग्रन्थराजके मूल सम्पादक स्व. पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका वृद्धापकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रन्थका प्रकाशन करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रद्धांजलि अर्पण कर हम दुःख समवेदना प्रकट करते हैं।

स्व. ब्र. रतनचन्द्रजी मुख्त्यार (सहारनपुर) तथा आदरणीय पू. आर्यिका विशुद्धमती माताजी के सम्पर्कमें धवला ग्रन्थोंका सूक्ष्म, गहन स्वाध्याय जिनका होता रहा ऐसे श्रीमान पं. जवाहरलालजी शास्त्री (भिंडर) तथा उनकी सुविद्य धर्मपत्नी श्रीमती कैलास जैन (भिंडर) द्वारा भेजे हुए संशोधनका भी इस संशोधनकार्यमें हमें सहयोग मिला, जिसके लिए हम इन सभी सज्जनोंके अतीव आभारी हैं। प्रस्तुत पुस्तकमें पूर्वमुद्रित पाठ और संशोधित पाठ अलगसे संलग्न किये गये हैं।

इस ग्रन्थका संशोधनकार्य जीवराज जैन ग्रन्थमालाके सम्पादक स्व. श्री. नरेन्द्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा श्री. धन्यकुमार जैनी द्वारा सम्पन्न हुआ है। तथा मुद्रणकार्य कल्याण प्रेस, सोलापुरके द्वारा सम्पन्न हुआ है। हम इनके भी आभार प्रदर्शित करते हैं।

धर्मानुरागी श्रीमान डॉ. अप्पासाहेब कलगोंडा पाटील तथा उनकी सुविद्य धर्मपत्नी डॉ. त्रिशलादेवी नाडगौडा पाटील इन महानुभावोंने षट्खंडागम धवला भाग १० से १६ तकके पुनर्मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान आदर्श उपस्थित किया

है उसके लिए उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए हम उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं।

रतनचंद सखाराम शहा
मंत्री